खुलासा मेयराज का (दर्शन लीला)

हक हादी रूहन सों, जो किया कौल अव्वल।
ए खुलासा मेयराज का, जो रूहों हुई रदबदल।। १ ।।

श्री राजजी महाराज ने श्री श्यामा महारानीजी से और रूहों से खेल में उतरने से पहले इश्क की रद-बदल (बातचीत) में जो वायदे किए थे, वह सब मेयराज में बताए हैं।

कौल अलस्तो-बे-रब का, किया रूहों सों जब।
हक इलम ले देखिए, सोई साइत है अब।। २ ।।

श्री राजजी ने जब रूहों से कहा कि मैं ही तुम्हारा एक परमात्मा हूं, अब हक का इल्म लेकर देखें तो अभी वही पल है।

तब वले कह्या अरवाहों ने, अर्स से उतरते।
किया जवाब हक ने, रूहों याद किया चाहिए ए।। ३ ।।

तब रूहों ने 'वले' शब्द कहकर स्वीकारा कि आप ही निश्चित रूप से हमारे खुदा हैं, श्री राजजी ने फिर कहा कि इसे याद रखना।

तुम माहों माहें रहियो साहेद, मैं केहेता हों तुम को।
याद राखियो आप में, इत मैं भी साहेद हों।। ४ ।।

हक ने रूहों से कहा तुम आपस में भी गवाह रहना और इस बात को याद रखना। मैं भी तुम्हारा गवाह रहूंगा।

और साहेद किए फरिस्ते, जिन जाओ तुम भूल।
फुरमान भेजोंगा तुम पर, हाथ मासूक रसूल।। ५ ।।

और जबराईल-असराफील को गवाह बनाया है, इसलिए तुम भूल मत जाना। मैं तुम्हारे वास्ते अपने प्यारे रसूल के हाथ फुरमान भेजूंगा।

मेयराज हुआ महंमद पर, तोलों हलता है उजू जल।
बैठक गरमी ना टरी, बेर ना भई एक पल।। ६ ।।

मुहम्मद साहब को जब दर्शन हुआ तो दुनियां के हिसाब से एक पल का भी समय नहीं हुआ, क्योंकि हाथ धोने वाले तालाब के पानी का हिलना बन्द नहीं हुआ और बैठने वाले स्थान से उठने पर गरमी हटने को जितना समय लगता है उतना भी समय नहीं लगा।

दिया निमूना अरवाहों को, एक पलक बेर जान।
वले जवाब रूहों कह्या, अजूं सोई अवाज बीच कान।। ७ ।।

यह रूह (मोमिनों) को याद दिलाने के वास्ते बताया है कि वहां पर एक क्षण भी नहीं हुआ। रूहों ने जो 'वले' शब्द कहा था उस 'ले' शब्द की आवाज बृज, रास और जागनी तीनों ब्रह्माण्डों की लीला देखने के बाद जब घर में उठेंगे तो सुनाई पड़ेगी।

उतर आए नासूत में, भूल गए अर्स की।
इत पैदा फना के बीच में, जाने हम हमेसगी।। ८ ।।

मोमिन अर्श से फर्श पर उतरे तो अर्श (घर) की बातें भूल गए। इस जन्म-मरण के संसार में आकर समझने लगे हैं कि हम हमेशा से ही यहां के हैं।

Nijanand App

अर्स रूहें भूली नासूत में, इनसों हक हादी निसबत।
ताए लिख भेज्या फुरमान में, अजूं सोई है साइत।। ९ ।।

परमधाम की रूहें, जो श्री राजजी श्री श्यामाजी की अंग हैं, नासूत में आकर अपनी निसबत भी भूल गई हैं। इनके वास्ते ही खुदा ने फरमान भेजा है। परमधाम में अभी वही समय है।

हाए हाए ए समया क्यों न रह्या, ए कैसा भोम का बल।
तो कह्या सिखरा सींग पर, रेहे न सके एक पल।। १० ।।

हाय! हाय! वह सब बातें याद क्यों नहीं रहीं? यह कैसा इस धरती का प्रभाव है? जैसे राई का दाना सींग पर एक पल नहीं टिक सकता, इसी तरह से यह ब्रह्माण्ड भी एक पल का है।

आए पड़े तिन फरेब में, चौदे तबकों न बका तरफ।
फना बीच सब खेलत, कोई बोल्या न बका हरफ।। ११ ।।

ऐसे फरेब (छल) के संसार में मोमिन आकर फंस गए हैं, जहां चौदह लोकों में घर की पहचान कराने वाला कोई नहीं है। इन चौदह लोकों के जीवों को इस नाशवान संसार का ही ज्ञान है। दुनियां से कोई भी अखण्ड घर का रास्ता बताने वाला नहीं है।

खेल झूठा झूठी रसमें, रूहें गैयां तिनमें मिल।
अब सीधा क्यों ए न होवहीं, जो हुकमें फिराया दिल।। १२ ।।

यह संसार झूठा है। यहां के सब रीति-रिवाज झूठे हैं। इनमें आकर मोमिन मिल गए हैं। श्री राजजी महाराज के हुकम से इनका जो दिल परमधाम से माया की तरफ मुड़ गया है वह अब प्रयास करने पर भी किसी तरह माया को नहीं छोड़ता।

कौल किया हकें इनसों, बीच खिलवत रूहों मजकूर।
दिया इलम लदुन्नी इनको, ए बीच दरगाह बिलंदी नूर।। १३ ।।

श्री राजजी महाराज ने मूल-मिलावे में इन्हीं मोमिनों से खेल में आकर ज्ञान देने का वायदा किया था। उसी के अनुसार तारतम ज्ञान लाकर परमधाम की रहने वाली रूहों को दिया।

देखो बड़ी बड़ाई इनकी, हकें मासूक भेज्या इन पर।
भेजी हाथ कुंजी रूह अपनी, और दई अपनी आमर।। १४ ।।

इन मोमिनों की बड़ाई देखो कि श्री राजजी महाराज ने अपने प्यारे माशूक श्री श्यामाजी को तारतम ज्ञान की कुंजी तथा अधिकार देकर भेजा है।

हुकम दिया दिल अर्स किया, हकें कह्या महंमद मासूक।
ए कौल सुन रूह मोमिन, हाए हाए हुए नहीं टूक-टूक।। १५ ।।

श्री राजजी महाराज ने श्री श्यामा महारानी को अपना अधिकार दिया और उनके दिल को अपना अर्श किया। इन वचनों को सुनकर मोमिन टुकड़े-टुकड़े क्यों नहीं होते?

जो कौल किए बीच खिलवत, हक हादी रूहों मिल।
सो क्यों तुमें याद न आवहीं, अर्स में तन तुम असल।। १६ ।।

श्री राजजी महाराज, श्री श्यामा महारानी और रूहों ने मिलकर मूल-मिलावे में जो वायदे किए थे वह तुम्हें याद क्यों नहीं आते, जबकि मूल तन तुम्हारे परमधाम में ही हैं।

Nijanand App

लिखे पहाड़ कर ईसा महंमद, ए निसान आखिर के।
हक बका अर्स देखावहीं, दिन जाहेर करसी ए।। १७ ।।

कुरान में ईसा रूह अल्लाह (श्यामा महारानी) और इमाम मेंहदी (श्री प्राणनाथजी) की महिमा आखिरी वक्त में सबसे बड़ी पहाड़ों जैसी होगी, लिखा है। वही अखण्ड परमधाम की बात को यहां आकर पहचान कराकर कयामत के दिन जाहिर करेंगे।

लिख्या सूरज मारफत का, होसी जाहेर महंमद से।
आई अर्स रूहें गिरो अहमदी, किए जाहेर जबराईलें।। १८ ।।

कुरान में लिखा है कि मारफत के ज्ञान का सूर्य आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी जाहिर करेंगे। श्री श्यामा महारानी के अंग रूहें घर से खेल देखने आई हैं। उनकी पहचान जबराईल फरिश्ते ने आकर कराई।

करसी बका अर्स जाहेर, ताके निसान पहाड़ बिलंद।
आखिर अपने कौल पर, आए जमाने खावंद।। १९ ।।

ईसा रूह अल्लाह (श्री श्यामा महारानी) और इमाम मेंहदी (श्री प्राणनाथजी) आकर अखण्ड परमधाम को जाहिर करेंगे, इसलिए इनकी पहाड़ों के समान ऊंची महिमा कही है। अपने किए वायदे के अनुसार आखिर जमाने के खाविंद आकर दो तनों में जाहिर हो गए।

हक बका का किबला, कह्या जाहेर होसी आखिरत।
पावें न माएना जाहेरी, मुसाफ माएने इसारत।। २० ।।

कुरान में लिखा है कि आखिरी समय में पारब्रह्म और अखण्ड परमधाम ही पूज्य हैं, ऐसा जाना जाएगा। कुरान की इन इशारतों को जाहिरी लोग नहीं समझ पाते।

हकें बुजरकी वास्ते, लिखी इसारतें पहाड़ कर।
सो दुनी पूजे पहाड़ जाहेरी, इनों नाहीं रूह की नजर।। २१ ।।

श्री राजजी महाराज ने ईसा रूह अल्लाह (श्री श्यामा महारानी, श्री देवचन्द्रजी) और इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी की महिमा पहाड़ जैसी जाहिर होगी, लिखा है। इसे दुनियां वाले "तकुआ और मरुआ" पहाड़ों की पूजा करते हैं। यह अन्दर की नजर से रहस्य को नहीं समझते।

कहे कुरान इन जिमी से, तरफ न पाई अर्स हक।
ए तेहेकीक किन ना किया, कई ढूंढ थके बुजरक।। २२ ।।

कुरान कहता है कि इस जमीन पर अखण्ड घर तथा पारब्रह्म की पहचान किसी को नहीं हुई। बड़े-बड़े विद्वान दृढ़ता के साथ ढूंढ़कर थक गए, परन्तु किसी ने निश्चित रूप से रास्ता नहीं बताया।

जो बची गिरोह कोहतूर तले, और तोफान किस्ती पर।
बेर तीसरी लैलत कदर में, जिन रोज कयामत करी फजर।। २३ ।।

जिनको बृज में गोवर्द्धन पर्वत के नीचे बचाया था और नूह-तोफान के समय उन्हें योगमाया की किश्ती में बिठाकर पार उतारा था, वही ब्रह्मसृष्टियां अब तीसरी बार लैल तुल कदर की रात्रि में आई हैं जिनके वास्ते तारतम ज्ञान ने अहंकार के अन्धकार को मिटाकर ज्ञान का उजाला किया।

सोई गिरो इसलाम की, खेल लैल देख्या दो बेर।
तीसरी बेर फजर की, जाके इलमें टाली अंधेर।। २४ ।।

उन्हीं ब्रह्मसृष्टियों की जमात ने दो बार बृज और रास का खेल देखा है और तीसरी बार इस जागनी के ब्रह्माण्ड में तारतम ज्ञान से अंधेरा मिटाकर सवेरा किया है।

Nijanand App

सिर बदले जो पाइए, महंमद दीन इसलाम।
और क्या चाहिए रूहन को, जो मिले आखिर गिरोह स्याम।। २५ ।।

अब उन रूहों को सिर देकर भी यदि मुहम्मद श्री प्राणनाथजी का सच्चा धर्म (निजानन्द सम्प्रदाय) मिलता है तथा श्री प्राणनाथजी और ब्रह्मसृष्टियां मिलती हैं, तो उनको और क्या चाहिए?

ए जो पैदा जुलमत से, सो कुंन केहेते उपजे।
मगज मुसाफ न पावत, लेत माएने ऊपर के।। २६ ।।

संसार के जीव जो निराकार से पैदा हैं। वह पारब्रह्म के कुंन (हो जा) कहने से हुए हैं, इसलिए यह कुरान के रहस्य को नहीं पाते और ऊपर के अर्थ लेते हैं।

कौल हमारे नूर पार के, सो क्यों समझें जुलमत के।
कुंन केहेते पैदा हुए, ला मकान के जे।। २७ ।।

हमारे वायदे अक्षर के पार परमधाम के हैं तो वह जो निराकार से कुंन शब्द रूपी आदेश से पैदा हुए हैं, वह कैसे समझेंगे?

लैलत कदर में रूहें फरिस्ते, जो अर्स से उतरे।
कौल किया हकें जिनसों, सो नूर बानी से समझेंगे।। २८ ।।

लैल तुल कदर की रात्रि में ब्रह्मसृष्टि और ईश्वरीसृष्टि अपने धामों से उतरी हैं। इनसे ही पारब्रह्म ने वायदे किए थे और यही तारतम वाणी से कुरान के रहस्य को समझेंगे।

फना जिमी के बीच में, जाहेरी पहाड़ पूजत।
दुनियां नजर फना मिने, अर्स बका न काहूं सूझत।। २९ ।।

इस फानी दुनियां में यहां के लोग जाहिरी पहाड़ों की पूजा करते हैं। दुनियां वालों की नजर मिटने वाले संसार में ही रहती है। अखण्ड घर की खबर किसी को नहीं है।

दिल हकीकी अर्स मोमिन, कह्या तिन दिल की भी तरफ नाहें।
वाकी इत तरफ क्यों पाइए, दिल रेहेत अर्स तन माहें।। ३० ।।

मोमिनों के दिलों को हक का अर्श कहा है। उन मोमिनों के दिल कहां हैं, इसकी जानकारी भी दुनियां वालों को नहीं है, क्योंकि उनके दिल तो परआतम में हैं जो परमधाम में हैं। उनकी पहचान यहां के लोग कैसे कर सकते हैं?

दिल अर्स मोमिन कह्या, जामें अमरद सूरत।
खिन न छूटे मोमिन से, मेहेबूब की मूरत।। ३१ ।।

मोमिनों के दिल को अर्श कहा है जिसमें श्री राजजी महाराज का किशोर स्वरूप विराजमान है। अपने ऐसे प्यारे धनी के स्वरूप को मोमिन एक पल के लिए भी नहीं छोड़ सकते।

ए जो फजर सूर असराफील, नुकता हुकम बजावत।
ले कुफर बैठे पहाड़ से, सो जरे ज्यों उड़ावत।। ३२ ।।

असराफील फरिश्ता तारतम वाणी लेकर श्री राजजी के हुकम से बिगुल बजाकर ज्ञान का सवेरा करेगा जिससे पहाड़ के समान धर्माचार्य जो झूठा ज्ञान लेकर बैठे हैं, तिनके के समान उड़ जाएंगे।

Nijanand App

और कुफर दुनी जो पहाड़सी, सूर दूजे कायम करत।
हकें मेहेर कर मोमिनों पर, बातून माएने लिखत।। ३३ ।।

यही असराफील फरिश्ता दूसरी बार सूर फूंककर झूठी दुनियां को जो पहाड़ के समान है, उड़ाकर अखण्ड कर देगा। श्री राजजी महाराज ने मोमिनों पर कृपा करके बातूनी छिपे रहस्य लिखकर बताए।

फरिस्ता नजीकी बुजरक, किया सब जिमी सिजदा जिन।
दई लानत न किया सिजदा, रद किया वास्ते मोमिन।। ३४ ।।

अजाजील फरिश्ता (विष्णु भगवान) जो नजदीक था और जिसने सारी जमीन पर पारब्रह्म को सिजदा किया था उसको आदम पर सिजदा न करने के कारण लानत लगा दी, क्योंकि मोमिनों को भुलाने वाला खेल दिखाना था।

दिल मोमिन अर्स कह्या, ए जो असल अर्स में तन।
ए लिख्या फुरमान में जाहेर, पर किया न बेवरा किन।। ३५ ।।

मोमिनों के दिल को अर्श कहा है, क्योंकि इनकी परआतम परमधाम में है। कुरान में ऐसा स्पष्ट लिखा है, परन्तु आज तक अर्श दिल वाले मोमिन कौन हैं, किसी ने नहीं जाना।

औलिया लिल्ला रूहें मोमिन, बोहोत नाम धरे उमत।
ए सब बड़ाई गिरो एक की, जो अर्स रूहें हक निसबत।। ३६ ।।

मोमिनों को खुदा का दोस्त कहा है और भी बहुतेरे नामों से मोमिनों की महिमा गाई है। यह सारी सिफत मोमिनों की एक जमात की है जो हक निसबती परमधाम के रहने वाले हैं।

हके कलाम लिखे अपने, कहे मैं भेजे मोमिनो पर।
सो फिरका खोले इसारतें रमूजें, बिन मोमिन न कोई कादर।। ३७ ।।

श्री राजजी महाराज ने मोमिनों के वास्ते ही अपनी वाणी (कुरान) को भेजा। उस कुरान की इशारतों और रमूजों (भेदों) को बिना मोमिनों के खोलने की शक्ति किसी में नहीं है।

हकें लिख्या मैं करूं हिदायत, एक नाजी फिरके को।
हुआ हजूर ले हक इलम, जले बहत्तर दोजखमों।। ३८ ।।

श्री राजजी महाराज ने कुरान में लिखा है कि मैं सिर्फ अपने रूह (मोमिनों) जिसको कुरान में नाजी फिरका कहा है, को हिदायत करूंगा। वह मेरे इल्म से पहचान कर मेरे पास आ जाएगा। बाकी बहत्तर फिरके दोजख में जलेंगे।

लिखियां सब बड़ाइयां, तिन सब सिर हक हुकम।
सो सब आमर दई हाथ रूहन, इनों दिल अर्स कर बैठे खसम।। ३९ ।।

संसार के सभी धर्मशास्त्रों में इसी नाजी फिरके की (ब्रह्मसृष्टियों की) महिमा कही गई है और इन्हीं सबके सिर पर हक का हुकम है। इन्हीं रूहों को संसार को अखण्ड करने का अधिकार दिया है, इसीलिए इनके दिल को श्री राजजी महाराज अपना अर्श करके बैठे हैं।

और दिल हकीकी अर्स मोमिन, हके दिल अर्स कह्या इन।
दिल मजाजी गोस्त टुकड़ा, और ऊपर कह्या दुस्मन।। ४० ।।

क्योंकि श्री राजजी महाराज मोमिनों के दिल को अर्श करके बैठे हैं, इसलिए इन मोमिनों के दिल ही सच्चे हैं। बाकी संसार के झूठे जीवों के दिल मांस के लोथड़े हैं, क्योंकि उनके दिल में शैतान अबलीस की बैठक है।

Nijanand App

दुनियां दिल मजाजी अवलीस, दिल हकीकी पर हक।
एक गिरो दिल अर्स कही, सोई अर्स रूहें बुजरक।। ४१ ।।

झूठे दिलों के अन्दर शैतान अबलीस बैठा है और सच्चे दिलों में पारब्रह्म विराजमान हैं। ऐसे दिल वाले रूहों को ही अर्श की गिरोह कहा गया है और परमधाम की रूहें सबसे महान कही गई हैं।

रूह की नजरों पाइए, जो हक के नजीकी।
सो बैठे अपने मरातबे, देवे हक कलाम साहेदी।। ४२ ।।

जो हक के नजदीकी मोमिन हैं उनको आत्मिक दृष्टि से ही पहचाना जा सकता है। वह अपने शोभा युक्त स्थान परमधाम में बैठे हैं। जिसकी गवाही कुरान देता है।

बड़ा फरिस्ता मलकूत का, जाए सके ना जबरूत जित।
सुनने हकीकत कुरान की, रखता नहीं ताकत।। ४३ ।।

बैकुण्ठ का बड़ा फरिश्ता अजाजील (विष्णु भगवान) है। वह जबरूत (अक्षरधाम) नहीं जा सकता। कुरान के वचनों को सुनने की ताकत भी उसमें नहीं है।

मलकूत जबरूत लाहूत, ए अर्स कर तीनो लिखे।
मलकूत फना बीच में, जबरूत लाहूत बका ए।। ४४ ।।

मलकूत (बैकुण्ठ), जबरूत (अक्षरधाम), लाहूत (परमधाम) इन्हीं तीनों धामों को जीव, ईश्वरी और ब्रह्मसृष्टि का धाम कहा है। इन तीनों में मलकूत (बैकुण्ठ) नाशवान है। जबरूत और लाहूत दोनों अखण्ड हैं।

नूर मकान जबरूत जो, पोहोंच्या जबराईल जित।
अर्स अजीम जो लाहूत, हक हादी रूहें बसत।। ४५ ।।

नूर मकान जो अक्षर धाम है वहां तक ही जबराईल फरिश्ता जाता है। अर्श अजीम जिसे परमधाम कहते हैं वहां श्री राजजी महाराज, श्री श्यामा महारानी और रूहें रहती हैं।

आगूं जबराईल जाए ना सक्या, वाकी हद जबरूत।
पोहोंच्या न ठौर रूहन के, जित नूर बिलंद लाहूत।। ४६ ।।

जबराईल फरिश्ता अक्षरधाम को छोड़कर आगे नहीं जा सका। नूर बिलंद (परमधाम) में जहां रूहें बैठी हैं, वहां नहीं जा सका, क्योंकि जबराईल की हद अक्षरधाम तक है।

हक हादी रूहें रूहअल्ला, ए बीच अर्स वाहेदत।
करे इलम लदुन्नी बेवरा, इत और न कोई पोहोंचत।। ४७ ।।

श्री राजजी महाराज, श्री श्यामा महारानी और रूहें जिस घर में एक दिल हैं। तारतम वाणी इसकी हकीकत बताती है। यहां और कोई दूसरा नहीं पहुंच सकता।

वाहेदत निसबत अर्स की, जब जाहेर हुई खिलवत।
ए सुकन सुन मोमिन, दिल लेसी अर्स लज्जत।। ४८ ।।

जब यहां पर अर्श की एकदिली और मूल-मिलावे की बातें जाहिर हुईं तो उन्हें सुनकर मोमिन घर के आनन्द का अनुभव करेंगे।

Nijanand App

ए बीच हमेसा खिलवत के, इनको हक मारफत।
वाहेदत एही केहेलावहीं, बीच अर्स अजीम उमत।।४९।।

यह मोमिन ही हमेशा परमधाम में रहते हैं और इनको ही पारब्रह्म की पहचान है। इन्हें ही पारब्रह्म के तन कहते हैं। इन्हीं को अर्श अजीम की उम्मत (जमात) कहा है।

बीच मेयराज इसारतें, मासूक लिख भेजत।
हांसी करने रूहन पर, ए जो फरेब देखाया इत।।५०।।

रसूल साहब को जब मेयराज (दर्शन) हुआ उस समय श्री राजजी महाराज ने इशारतों में कुछ संदेश अपनी रूहों पर हंसी करने के वास्ते जो झूठा खेल उन्हें दिखाया है, लिखकर भेजा है।

हक अर्स नजीक सेहेरग से, दोऊ हादी खोले द्वार।
बैठाए अर्स अजीम में, जो कह्या मेयराजें नूर पार।।५१।।

इन मोमिनों के पारब्रह्म सेहेरग (शहरग) से नजदीक है। इसकी जानकारी रूह अल्लाह श्यामा महारानी श्री देवचन्दजी तथा मुहम्मद साहब श्री प्राणनाथजी दोनों हादियों ने दी। इन दोनों ने परमधाम के दरवाजे खोल दिए और अक्षर के पार अर्श अजीम में अन्दर बिठा लिया।

किन तरफ न पाई अर्स हक की, मांहें चौदे तबक।
सो खोल दिए पट हादिएं, इलम ईसे के बेसक।।५२।।

चौदह लोकों के बीच में किसी को भी श्री राजजी का तथा परमधाम का पता नहीं है। ईसा (श्री देवचन्द्रजी) के तारतम ज्ञान से हादी श्री प्राणनाथजी ने सबके लिए उसके दरवाजे खोल दिए।

देखो मरातबा मोमिनों, बोलें न मेयराज बिन।
जो हकें हरफ छिपे रखे, वास्ते अर्स रूहन।।५३।।

इन मोमिनों की महानता देखो। यह बिना प्रत्यक्ष देखे कोई बात नहीं बोलते। पारब्रह्म ने जो अर्श की रूहों के वास्ते हरफ छिपा कर रखे थे, यह रूहें उसी का बखान करती हैं।

मेयराज में जो इसारतें, हक इलमें खोलें मोमिन।
कहें गुझ छिपा दिल हक का, कोई ना कादर या बिन।।५४।।

मेयराज (दर्शन) के समय श्री राजजी महाराज ने जो बातें इशारतों में कही थीं, तारतम ज्ञान से मोमिनों ने ही उनके भेद खोले। हक के दिल की छिपी बातों को मोमिनों के बिना दूसरा कोई नहीं खोल सकता।

कई जोर किया जबराईलें, आया एक कदम महंमद खातिर।
तो भी आगूं आए न सक्या, कहे जलें मेरे पर।।५५।।

जबराईल ने बहुत ताकत लगाई और रसूल साहब के वास्ते एक कदम आगे आया भी, फिर भी वह आगे नहीं जा सका। कहता है कि मेरे पर जलते हैं।

चढ़ उतर के देखाइया, वास्ते राह मोमिन।
जो रूहें उतरी लैलत कदर में, सो चढ़ जाएंगे अर्स वतन।।५६।।

मुहम्मद साहब ने मोमिनों के वास्ते अर्श में आने जाने का रास्ता बताया। अब जो रूहें लैल तुल कदर में उतरी हैं वह इस रास्ते से चढ़कर अपने घर पहुंचेंगे।

Nijanand App

इसारतें मेयराज में, जो लिख भेजियां हक।
सो खोलें हम इसारतें, पढ़ायल रूह अल्ला के बेसक।।५७ ।।

श्री राजजी महाराज ने मेयराज (दर्शन) के समय जो इशारतें लिखकर भेजीं, उनको हम रूह अल्लाह (श्यामा महारानी, देवचन्द्रजी) के तारतम ज्ञान से पहचान कर उनके रहस्यों को खोल देते हैं।

कह्या मीठा दरिया उजला, जो देख्या नबी नजर।
तिन किनारे दरखत, जित बैठा जानवर।।५८ ।।

रसूल साहब ने नूरनामे में लिखा है कि मीठे और साफ जल वाले दरिया संसार के किनारे पर हुकम रूपी वृक्ष लगा है। उस वृक्ष के ऊपर वहां एक पक्षी बैठा है।

अन्दर मुरग जो कह्या, बैठा हुकम के दरखत।
इत ना पोहोंच्या जबराईल, सो मोमिन खोले मारफत।।५९ ।।

हुकम रूपी वृक्ष के ऊपर मुर्गा (देवचन्द्रजी की सुरता) बैठी है जहां पर जबराईल फरिश्ता नहीं पहुंच सका। मोमिनों ने ही इस रहस्य को खोला।

चुटकी खाक ले चोंच में, मुरग बैठा दरखत पर।
पर ना जलें इन मुरग के, सो कोई देवे एह खबर।।६० ।।

हुकम के पेड़ के ऊपर मुर्गा अपनी चोंच में खाक दबाए है, अर्थात् श्यामा महारानी श्री देवचन्द्रजी रूपी मिटने वाला तन लेकर बैठे हैं। इस मुर्गे के पर क्यों नहीं जलते, कोई इस बात के भेद को खोले?

हादीएं पूछा हक से, क्यों खाक धरी चोंच में।
खेल उमतें मांगिया, गुनाह वजूद हुआ तिनसे।।६१ ।।

रसूल साहब ने हक श्री राजजी महाराज से पूछा कि चोंच में खाक क्यों दबा रखी है? श्री राजजी महाराज ने उत्तर दिया कि उम्मत ने झूठा खेल मांग लिया है। यही उनसे गुनाह हुआ है और इन मोमिनों को घर वापस लाने को ही श्यामा महारानी को नर तन (देवचन्द्रजी का) धारण करना पड़ा है।

लिख्या दरिया नींद इसारतें, जो देखाई कर मेहेरबानगी।
मोहे रूह अल्ला पट खोलिया, दई महंमदें मेयराज में साहेदी।।६२ ।।

कुरान में नींद को ही इशारतों में भव सागर कहा है जिसे हक परवरदिगार ने कृपा करके रूहों को दिखाया है। श्री महामतिजी कहते हैं कि मुझे रूह अल्लाह (श्यामा महारानी श्री देवचन्द्रजी) ने तारतम ज्ञान देकर मेरे अज्ञान का परदा हटा दिया। इस बात की गवाही रसूल साहब ने भी मेयराज में दी है।

ए जो मुरग मेयराज में अंदर, हर साइत यों केहेता था।
जो छोडूं खाक चोंच से, तो दरिया होए जाए अंधेरा।।६३ ।।

श्री श्यामाजी की आत्मा पल-पल फरामोशी में कह रही थी कि यदि मैं चोंच से खाक छोड़ दूं तो दरिया अंधेरा हो जाएगा, अर्थात् संसार का प्रलय हो जाएगा।

दरिया उजला दूध सा, मेहेर मीठा मिश्री।
ए दरिया कबूं न होए अंधेरा, ए हकें रूहों पर मेहेर करी।।६४ ।।

यह श्री राजजी महाराज की मेहर से बना संसार जो दूध के समान उज्ज्वल है, मिश्री से मीठा है, यह संसार कभी मिटेगा नहीं, क्योंकि श्री राजजी महाराज ने रूहों पर कृपा करके इसे बनाया है, अर्थात् यह अखण्ड हो जाएगा।

Nijanand App

कह्या खाक वजूद नासूती, हादी बैठा वजूद धर।
दुनी दरिया अंधेरी, हादी चले ना होए क्यों कर।। ६५ ।।

हादी श्री श्यामाजी ने यहां मृत्युलोक में श्री देवचन्द्रजी का तन धारण किया है। इसी को खाक कहा है। यदि श्री श्यामाजी तन छोड़ देंगे तो यह दुनियां रूपी दरिया समाप्त हो जाएगा।

हकें देखाया दरिया मेहेर का, सो अंधेरा क्यों ए ना होए।
करसी कायम चौदे तबक, बरकत हादी रूहों सोए।। ६६ ।।

श्री राजजी महाराज ने मेहर करके रूहों को यह संसार दिखाया है। इसलिए यह मिटेगा नहीं, बल्कि हादी और रूहों की कृपा से चौदह लोकों का ब्रह्माण्ड अखण्ड हो जाएगा।

नूर तजल्ला बीच में, हक हादी रूहों खिलवत।
हक से हादी रूहें नूर में, ए अर्स असल वाहेदत।। ६७ ।।

परमधाम (मूल-मिलावा) में श्री राजजी, श्री श्यामाजी और रूहें बैठी हैं। श्री राजजी से श्यामाजी और श्यामाजी से रूहें नूरी तन में हैं। यही परमधाम की एकदिली है।

नूर तजल्ला बीच में, लिख्या गुनाह पोहोंच्या रूहन।
जित आए न सक्या जबराईल, इत असल मोमिनों तन।। ६८ ।।

परमधाम के बीच जहां रूहों के असल नूरी तन हैं और जहां जबराईल नहीं जा सका, वहां रूहों को गुनाह लगा, (रूहों ने खेल मांगा) ऐसा कुरान में लिखा है।

लिया हाथ हिसाब याही वास्ते, हक रूहों पर हांसी करत।
हक हादी रूहें रूह अल्ला, होसी हांसी इन खिलवत।। ६९ ।।

रूहों के खेल में आने के कारण ही पारब्रह्म को न्यायाधीश बनकर यहां आना पड़ा, क्योंकि श्री राजजी महाराज रूहों पर हांसी करना चाहते हैं। अब परमधाम जहां पर श्री राजजी, श्री श्यामाजी और रूहें हैं, के मूल-मिलावे में हांसी होगी।

मोतिन के मुंह ऊपर, कुलफ लिख्या मांहें फुरमान।
इन गुन्हेगारों के दिल को, अपना अर्स कर बैठे मेहेरबान।। ७० ।।

मोमिन जो अर्श के मोती हैं उनके मुंह पर ताला लगा था, अर्थात् फरामोशी में बैठे थे। ऐसे गुन्हेगार मोमिनों के दिल को श्री राजजी महाराज अपना अर्श करके बैठे हैं।

सो कुलफ कह्या फरामोस का, कह्या गुनाह रूहों का दिल।
खेल मांग्या फरामोस का, कर एक दिल सब मिल।। ७१ ।।

यह ताला जो रूहों के मुंह पर लगा है, फरामोशी का है, क्योंकि रूहों ने एकदिली करके खेल मांगा है, इसलिए इनके दिल पर गुनाह कहा है।

फरामोस गुनाह दिल मोमिनों, सोई कुलफ गुनाह इनों दिल।
याकी कुंजी दिल महंमद, सो टाले फरामोसी दे अकल।। ७२ ।।

मोमिनों के दिलों पर फरामोशी का ताला है। उसी फरामोशी से मोमिन संसार में मग्न हैं। उनके ताले को खोलने की कुंजी श्री श्यामाजी (मुहम्मद) लेकर आए हैं और तारतम का ज्ञान देकर ताला खोल देंगी।

Nijanand App

कहे महंमद सुनो मोमिनो, ए उमी मेरे यार।
छोड़ दुनी ल्यो अर्स को, जो अपना वतन नूर पार।।७३।।

आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी कहते हैं, हे मोमिनो! सुनो। तुम निश्चित रूप से अनपढ़ मेरे यार हो, इसीलिए दुनियां को छोड़कर घर परमधाम का रास्ता लो अपना घर अक्षर के पार है।

हम बंदे रूहें इन दरगाह, कह्या अर्स दिल मोमिन।
यारों बुलावें महंमद, करो सिजदा हजूर अर्स तन।।७४।।

हम सभी रूहें इसी परमधाम की रहने वाली हैं जिनके दिल में पारब्रह्म अर्श करके बैठे हैं। इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी बुलाकर कहते हैं कि इस साक्षात पारब्रह्म श्री राजजी महाराज जो मेरे दिल में विराजमान हैं, को आकर सिजदा करो।

।। प्रकरण ।। ३ ।। चौपाई ।। २६४ ।।

खुलासा इसलाम का

असल खुलासा इसलाम का, सब राह करत रोसन।
झूठ से सांच जुदा कर, देसी आखिर सुख सबन।।१।।

असल खुलासा इस्लाम (निजानन्द सम्प्रदाय) का सच्चा ज्ञान सब धर्मों की हकीकत बताता है। यह माया और ब्रह्म की अलग-अलग पहचान कराकर अन्त में सबको सुख प्रदान करेगा।

मगज मुसाफ और हदीसें, हादी हिदायत देखें मोमिन।
ए खुलासा बिने इसलाम का, सबों देखावे बका वतन।।२।।

हादी श्री प्राणनाथजी की कृपा से कुरान और हदीसों के छिपे रहस्य मोमिन समझेंगे और सबको अखण्ड परमधाम का दर्शन कराएंगे। [यही निजानन्द सम्प्रदाय (दीन-ए-इस्लाम) का नियम है।]

बका फना का बेवरा, पाया मगज सबका ए।
हादी रूहें अर्स से इजने, लैलत कदर में उतरे।।३।।

अखण्ड परमधाम और मिथ्या माया दोनों का सार यह है कि हादी श्री श्यामाजी और रूहें श्री राजजी महाराज के हुकम से लैल तुल कदर की रात्रि में संसार में आए हैं।

हकें कह्या अलस्तो-बे-रब-कुंम, कालू बेले कह्या रूहन।
खेल देख मुंह फेरोगे, न मानोगे रसूल सुकन।।४।।

खेल में उतरते समय श्री राजजी महाराज ने कहा, हे रूहो! मैं ही तुम्हारा वाहिद (एक) खुदा हूं। तब रूहों ने तुरन्त उत्तर दिया कि बेशक आप ही हमारे धनी हैं। तब श्री राजजी महाराज ने कहा कि जब खेल में जाओगी तो मेरे से विमुख हो जाओगी और रसूल के वचनों को नहीं मानोगी।

भी फुरमाया तुम भूलोगे, साहेद किए रूहें फरिस्ते।
मैं तुममें साहेद तुम दीजियो, आप अपनी उमत के।।५।।

श्री राजजी ने कहा कि तुम मुझे अवश्य भूल जाओगी। इसलिए मैंने रूहों और जबराईल, असराफील को गवाह बनाया है। श्यामाजी! मैं भी तुम्हारी गवाही दूंगा और तुम अपनी रूहों की गवाही देना।

चौथे आसमान लाहूत में, रूहें बैठी बारे हजार।
इन तसबी से पैदा होत हैं, फरिस्तों का सिरदार।।६।।

चौथे आसमान लाहूत में बारह हजार रूहें बैठी हैं। उनके इस सिलसिले से देवताओं के सिरदार महाविष्णु की उत्पत्ति हुई।

Nijanand App